International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 153-155

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में अष्टछाप कवि

पवन कुमार
प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विधालय, उखलचना जिला झज्जर हरियाणा, भारत।

सांराश
मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में विभिन्न सन्तो नें अपने अपने आराध्य देव के समर्थन में अनेक पदों की रचना करते हुये उनकी स्तुति की है। भक्ति के अन्तर्गत कृष्ण को आराध्य बनाकर पुष्टि मार्ग के जिन आठ कवियों ने स्तुति की है। उनको अष्टछाप के कवि कहा जाता है। प्रस्तुत विषय इन्हीं आठ कवियों का एक संक्षिप्त परिचय है।

मुख्य शब्द : मध्यकालीन भक्ति, अष्टछाप कवि।

प्रस्तावना
हिन्दू धर्म में मोक्ष प्राप्ति के तीन प्रमुख मार्ग माने गये हैं,–ज्ञान, धर्म, भक्ति। इनमें से भक्ति की परम्परा प्राचीनकाल से अन्य मार्गों की तरह मान्यता रखती है लेकिन पूर्वमध्यकाल दक्षिण भारत में विशेषकर तमिलभाषी क्षेत्र में भक्ति भावना का व्यापक प्रचार हुआ और इसकी लोकप्रियता में अत्यधिक वृद्धि हुई है। मध्यकाल में कई धार्मिक विचारको तथा सन्तो ने भारत के सामाजिक धार्मिक जीवन में सुधार लाने के उद्देश्य से भक्ति को साधन बनाकर एक आंदोलन प्रारम्भ किया जिसे भक्ति आन्दोलन कहा गया। सर्वप्रथम इसका उदय द्रविड़ देश में हुआ। वहीं से उसका प्रचार उत्तर की ओर हुआ। तमिल भाषी क्षेत्र में भक्ति भावना को लोकप्रिय बनाने में संतों के दो सम्प्रदायों की भूमिका निर्णायक रही– आलवार और नयनार। विष्णु को आराध्य देव मानकर उनकी भक्ति करने वाले आलवार एवं शिव–भक्त नयनार कहलाए। इन्होनें ईश्वर के प्रति व्यक्गित प्रेम और सम्पर्ण को मोक्ष प्राप्ति का प्रत्यक्ष मार्ग बताया और जाति प्रथा पर प्रहार किया।
मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के अग्रदूत रामानुजाचार्य थे जिनका जन्म 1018 ई0 में हुआ[1] रामानुज के बाद माध्वाचार्य ने द्वैतवाद की अवधारणा पर भक्ति की व्याख्या की। इनका कहना था कि आत्मा व परमात्मा के दो अस्तित्व अलग अलग है और इन दोनों का एक होना सम्भव नहीं है। रामानुज के समकालीन निम्बार्काचार्य ने द्वेत –अद्वैत सिद्धांत की प्रस्तुति की। भक्ति आंदोलन के इन प्रारंभिक संतों का मौलिक प्रयास हिन्दूधर्म के मूल तत्व, मोक्ष प्राप्ति को ज्यादा से ज्यादा लोगों के लिये आसान बनाना था।

अष्टछाप कवि
श्री बल्लभाचार्य ने जिस पुष्टिमार्गीय भक्ति सम्प्रदाय की स्थापना की थी उसका जिन भक्त कवियों द्वारा पल्लवन किया गया, उन्हें अष्टछाप के कवि कहा जाता है[2]। पुष्टिमार्ग को स्वीकार करने वाले अनेक भक्त उस समय विद्यमान थे किन्तु जिन आठ भक्त कवियों पर गोस्वामी बिट्ठल नाथ ने अपने आशीर्वाद की छाप लगाई थी वे अष्टसखा या अष्टछाप के नाम से प्रसिद्ध है[3]। इन आठ में से बल्लभाचार्य के चार शिष्य थे – कुभनदास, सूरदास, परमानन्द दास और कृष्ण दास। बाकी चार गोस्वामी बिट्ठलनाथ के शिष्य थे– गोविन्दस्वामी, नंन्ददास, छींतस्वामी और चतुभुर्जदास। इन अष्टछाप के कवियों को बल्लभ संप्रदाय में कृष्ण का अष्टसखा भी कहा जाता है। लीलामय भगवान कृष्ण के प्रति भक्ति के आवेश में इन कवियों के हृदय से गीत काव्य की जो धारा फूटी वह भक्तों के साथ की काव्य रसिकों के हृदय को रसमग्न करने की पूर्ण क्षमता रखती है।

1. सूरदास
अष्टछाप कवियों ने सूरदास का स्थान सर्वोपरि है। सूरदास का समय 1483 से 1563 ई0 के बीच बताया गया है। सूर साहित्य के अन्तः साक्ष्य तथा समकालीन प्ररवर्ती रचनाओं के बहि साक्ष्य के आधार पर सूर के शोधकर्ता विद्वान इस निष्कर्ष पर पहूंचे है कि सं0 1535 की बैशाख शुक्त को इनका जन्म हुआ[4] कई विद्वावनों ने इनका जन्म काल 1478 ई0 पर स्थिर कियां है[5]। इनका जन्म स्थान बल्लभगढ़ फरीदाबाद के निकटवर्ती सींही नामक गांव माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि ये नेत्रविहिन थे किन्तु उनके जन्मांध होने पर विवाद है। 40 वर्ष की अवस्था में ये बल्लभाचार्य के शिष्य बने इसके बाद ये चन्द्रसरोवर के समीप पारसोली गांव में रहने लगे थे जहां पर 1583 ई0 में उनका देहावसान हुआ[6]। बिट्ठलनाथ ने शोकाकुल होकर कहा था, ''पुष्टिमारग को जहाज जात है, सो जाको कछु लेना होय सो लेऊ।
सूरदास ने अनेक रचनाएं लिखी जिनमें से सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी आदि प्रमुख है। डा0 दीनदयाल गुप्त ने उनके द्वारा रचित 25 पुस्तकों की सूचना दी। सूर की रचनाओं में उनके काव्य का मुख्य विषय कृष्ण भक्ति है। सूरसागर में राधा के कृष्ण प्रेम आदर्श को भक्तों की आराधना का आदर्श माना। कृष्ण के प्रति अपने अदम्य प्रेम एवं भक्ति को उन्होनें कृष्ण की बाल लीलाओं, रास लीलाओं इत्यादि में प्रदर्शित किया है। सूरसागर की रचना '' भागवत, की पद्धती पर द्वादश स्कन्धो में हुई है। साहित्य लहरी सूरदास के सुप्रसिद्ध दृष्कूट पदों का संग्रह है। सूरदास ने कृष्ण के दो रूपों का संग्रह किया है। शिशुरूप 2. श्रृगारिक रूप। सूरदास की कृष्ण भक्ति सखाभाव की भक्ति है। उनकी वाणी का जनसाधारण पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

2. कुंभनदास
कुंभनदास अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि थे। कुंभनदास का चरित्र चौरासी वैष्णवन की वार्ता के अनुसार संकलित किया जाता है योंकि इन्होनें अपने सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा। हरिराय कृत

भावप्रकाश में संकेत है कि कुंभनदास ब्रज में गोवर्धन प्रर्वत से कुछ दूर 'जमुनावतौ' गांव में रहा करते थे[7]। वे खेती बाड़ी काते थे कुम्भनदास के सात पुत्र थे जिनमें से सबसे छोटे चतुभुर्ज को छोड कर अन्य सभी कृषि कर्म में लगे रहते थे इन्होनें 1492 ई0 में महाप्रभु बल्लभाचार्य से दीक्षा ग्रहण की। कहा जाता है कि किसी गायक ने एक बार उनका कोइ पद बादशाह अकबर को सुनाया जिसे सुनकर इस पद के रचयिता से ही इस पद को सुनने की अकबर की इच्छा हुई और कुंभनदास को सीकरी आने का निमंत्रन दिया। कुंभनदास ने अकबर के सामने जो पद कहा वह उनके अनाशक्त भाव का सूचक
'है।

''भक्तन को कहा सीकरी सों काम।
आवत जात कन्हैसा टूटी बिसरि गयो हरिनाम।
जाको दिखे दुख लागे ताकौ करण परी परनाम।
कुंभनदास लाल गिरिधर बिन यह सब झूठो धाम[8]।

अकबर ने प्रश्न होकर जब इन्हें कुछ मांगने को कहा तो इन्होनें इच्छा पकट की कि भविष्य में मुझे सीकरी मत बुलाना। वे पूरी तरह निरक्त ओर धन, मान, मर्यादा की इच्छा से कोसों दूर थे। कुंभनदास श्री नाथ जी के मन्दिर में कीर्तन करते थे इनके द्वारा रचित किसी स्वतन्त्र ग्रंथ का उल्लेख नहीं मिलता। इनके कुछ पद राग कल्पद्रुम, रागरत्नागर बंसन्तधमार कीर्तन आदि में संकलित है। कुभंनदास की काव्य भाषा ब्रज है। जो उस समय गोर्वधन के समीप बोलचाल की भाषा रही होगी।

3. कृष्णदास

कृष्णदास मध्यकालीन भक्ति के अष्टछाप के उल्लेखनीय कवि रहे हैं डा0 दीनदयाल गुप्त ने अष्टछाप और बल्लभ सम्प्रदाय ग्रन्थ में कृष्णदास को 'कुनबी' जाति सम्बन्धित किया है। इनका जन्म गुजरात में राजनगर के चिलोत्रा गांव में 1496 ई0 में हुआ। बाल्यकाल में ही ये घर छोड़कर ब्रज में आ गये। अपनी विद्वता एवं भक्ति भावना के कारण श्रीनाथ जी के मन्दिर में प्रधान पद नियुक्त हुये।
कृष्णदास कवि होने के साथ साथ संगीत के भी जानकार थे। इन्होनें राधा कृष्ण के प्रेम एवं रूप सौन्दर्य का बड़ा ही मनोहर वर्णन किया है। मूलरूप से गुजराती होते हुये भी इनकी काव्य की भाषा ब्रज है।

4. परमानन्द दास

अष्टछाप के कृष्णभक्त कवियों में परमानंददास भी महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश को कन्नौज में एक गरीब कान्याकुब्ज ब्राहम्ण परिवार में हुआ था। बचपन से ही इन्में काव्य कौशल विद्यमान् था। इन्होनें गृहस्थ आश्रम में प्रवेश नहीं किया, न ही कोई व्यवसाय धन अर्जित करने के उद्देश्य से किया।
परमानन्द की रचनाओं का प्रकाशन 'परमानन्दसागर', परमानन्द के पद' और बल्लभसम्प्रदायी कीर्तन पद संग्रह' शीर्षक से हुआ है। इन्होनें भी सूरदास नंन्द दास की तरह भागवत कथा से ही प्रसंगों का चयन किया है। कृष्ण के बाल स्वभाव का सर्वाधिक सुंदरवर्णन सूरदास के बाद परमानन्ददास ने ही किया है। भाषा ब्रज का माधुर्य इनके पक्षों में दिखाई देता है।

'गोवर्धन पूजि कै, घर आवे।
जननी जसौदा करत आरती मोतिन चोक पुराए।।
मंगल कलस विराजित द्वारे वंदनिवारि बनाए।
परमानंद गिरिधर गिरि पूजयों भोजन मन भाए[9]।।

5. छीतस्वामी

छीतस्वामी भी अष्टछाप के महत्वपूर्ण कवि रहे हैं इनका जन्म 1515 ई0 में माना जाता है ये मथुरा के चतुर्वेदी ब्राहम्ण परिवार से थे। इनके घर जजमानी एवं पंण्डागिरी होती थी। कहा जाता है कि ये बीरबल के पूरोहित थे अपनी यौवन अवस्था में ये उदण्ड पृवर्ति के थे गोस्वामी बिट्ठलनाथ के प्रभाव से पुष्टिमार्ग में दीक्षित हुए। इनकी पद रचना को देखते हुये इन्हें अष्टछाप में शामिल किया गया। काव्य एवं संगीत में इनके विशेष रूची बनी। इनका कोई स्वतन्त्र ग्रंन्थ नहीं मिलता। इनकी भाषा में भी ब्रजभाषा का पर्याप्त लालित्य है। साधारण कोटि की कविता होते हुए भी भक्ति भाव से भरी हुई है।

आपुन में आपुन ही सेवा करत।
आपुन ही प्रभु आपुन सेवक, आपुन रूप घरत।
आपुन धरम करम सब आपुने, आपुनिय विधि अनुसरत
दींतस्वामी गिरिधरन श्री बिट्ठल, भक्त बछल भयहरन[10]।।

6. गोविन्दस्वामी

कृष्णभक्ति के प्रमुख कार्यों में गोविन्दस्वामी भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं इनका जन्म आंतरी गांव भरत पुर राजस्थान में 1505 ई0 में हुआ था ये गृहस्थ हुए और सन्तान के रूप में एक पुत्री थी संसार वैराग्य होने पर ये ब्रजमण्डल के पास महावन में आकर रहने लगे। 1535 ई0 में इन्होनें गोस्वामी बिट्ठल नाथ से पुष्टि मार्ग में दीक्षा ली। इसके बाद वे गोर्वधन चले आये। कहा जाता है कि तानसेन ने इनसे पद गायन की शिक्षा ली थी। जहां ये रहते थे वह स्थान गोविन्दस्वामी की कदमखण्डी के नाम से प्रसिद्ध है। गोविन्दस्वामी ने किसी स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना नहीं की इनके भजन व कीर्तन गोबिन्दस्वामी के नाम से प्रसिद्ध है। इन्होनें राधा कृष्ण प्रेम की श्रंगार लीला के बारे में पद रचना की है। भाषा ब्रज है लेकिन सूरदास आदि अन्य कवियों जैसा लालित्य इनके पदों में दिखाई नहीं देता।

7. चतुभर्ज

चतुभुर्ज परम संतकवि थे। ये अष्टछाप कवि कुभंनदास के सबसे छोटे पुत्र थे इनका जन्म गोवर्धन के समीप जमुनावती गांव में 1530 में हुआ। ये परम विरागी थे और श्रीनाथ जी की सेवा में नित्य नवीन पद रचकर समर्पित करते थे। उनका मन सदैव भगवान के प्रेम में डूबा रहता था ये गोस्वामी बिट्ठलनाथ और श्रीनाथ जी को एक ही मानते थे। इन्होनें श्रीनाथ जी के श्रंगार और विरह के पद लिखे हैं इनके 'स्फुट पदों को चतुर्भज कीर्तन संग्रह ''कीर्तनावली'' और दान लीला शीर्षकों से प्रकाशित किया गया। भाषा के रूप में इन्होनें काव्य साधारण ब्रजभाषा को भी अपनाया है।

''देखी सखी। वन ते वने हरि आवत।
आगे घेनु रेनु तन मडित मधुरे द्वेनु बजावत।।
सकल सिंगार अनूप विरजति चितवन चितहिं चुरावत।
उगमगि चाल ग्वाल मंडल में मन मथ कोटि लजावत[11]।।

8. नंददास

नंददास का जन्म 1533 में उत्तर प्रदेश के रामपुर में हुआ। नंद दास और तुलसीदास चचेरे भाई थे। नंददास बहुमुखी प्रतिभा के

भक्त कवि थे। नंद दास की अनेक रचनाएं जिनमें रास पंचाध्यायी प्रमुख है।

सुखसागर की तरह ही पंचाध्यायी का मुख्य आधार श्री मद्भगवत है। नंददास में अपनी रचनाओं में सगुण भक्ति तर्कसम्मत ढंग से प्रस्तुत किया। जिससे भगवान कृष्ण साकार भक्ति को विशेष बल मिल। नंददास की अन्य रचनाओं में प्रेमबाराखड़ी, सुदामा रचित, भंवरगीत, सिद्धान्त पंचाध्याय आदि प्रमुख हैं। इनके ग्रन्थ प्रमार्जित ब्रजभाषा में है उनके काव्य की प्रमुख विशेषता इनका शब्द चयन है। नंददास को जड़िया कहा जाता है। कृष्णभक्त कवियों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ सूची

1. अहमद इमत्याज, मध्यकालीन भारत एक सर्वेक्षण (8वीं–18वीं शताब्दी) पृ.140
2. डा0 नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 200
3. उपरोक्त, पृ.200
4. शर्मा, शिवकुमार, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियां, पृ.274
5. डा0 नगेंन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ0 201
6. उपरोक्त, पृ. 201
7. उपरोक्त पृ. 205
8. उपरोक्त पृ.205
9. डा0 हरगूलाल अष्टछाप के कवि परमानंददास, डिविजन पब्लिकेशन भारत सरकार पृ0 88
10. यामदग्नि डा0 बसन्त अष्टछाप के कवि छीतस्वामी डिविजन पब्लिकेशन पृ0 66
11. डा0 हरगुलाल अष्टछाप के कवि चतुर्भजदास डिविजन पब्लिकेशन भारत सरकार पृ0 40